SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

कोविड–19 : ऑनलाइन शिक्षा एवं परिषदीय छात्र

अंजना अग्रवाल, बेसिक शिक्षा विभाग,
कानपुर, उत्तरप्रदेश, भारत
रामकुमार, प्राचार्य,
राजकीय नर्सिंग महाविद्यालय, कानपुर, उत्तरप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors :
अंजना अग्रवाल, बेसिक शिक्षा विभाग,
कानपुर, उत्तरप्रदेश, भारत
रामकुमार, प्राचार्य,
राजकीय नर्सिंग महाविद्यालय, कानपुर,
उत्तरप्रदेश, भारत
shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 10/08/2020
Revised on : -----
Accepted on : 17/08/2020
Plagiarism : 00% on 10/08/2020

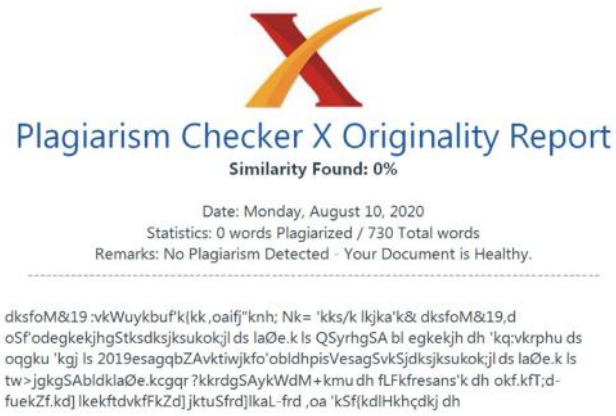
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Monday, August 10, 2020
Statistics: 0 words Plagiarized / 730 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

dksfoM&19 :vkWuykbuf'k{kk ,oaifj"knh; Nk= 'kks/k lkjka'k& dksfoM&19,d oSf'odegkekjhgStksdksjksukokjl ds laØe.k ls QSyrhgSA bl egkekjh dh 'kq:vkrphu ds oqgku 'kgj ls 2019esagqbZAvktiwjkfo'obldhpisVesagSvkSjdksjksukokjl ds laØe.k ls tw>jgkgSAbldklaØe.kcgqr ?kkrdgSAykWdM+kmu dh fLFkfresans'k dh okf.kfT;d-fuekZf.kd] lkekftdvkfFkZd] jktuSfrd]lkaL-frd ,oa 'kSf{kdlHkhçdkj dh

शोध सार :

कोविड–19 एक वैश्विक महामारी है जो कोरोना वायरस के संक्रमण से फैलती है। इस महामारी की शुरूआत चीन के वुहान शहर से 2019 में हुई। आज पूरा विश्व इसकी चपेट में है और कोरोना वायरस के संक्रमण से जूझ रहा है। इसका संक्रमण बहुत घातक है। लॉकड़ाउन की स्थिति में देश की वाणिज्यिक. निर्माणिक, सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक सभी प्रकार की गतिविधियों पर रोक लगा दी गई थी। जिससे देश की अर्थव्यवस्था एवं सभी क्षेत्रों में बिखराव की स्थिति पैदा हो गई। छात्र हितों एवं उनके जीवन को सुरक्षित रखने के दृष्टिकोण से केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्चशिक्षा तक को ऑनलाइन माध्यम से दिये जाने का निर्णय लिया गया। ऑनलाइन शिक्षा, शिक्षा का एक ऐसा माध्यम है जिसके माध्यम से कोई भी शिक्षक अपने घर पर रहकर इण्टरनेट के माध्यम से देश के किसी भी कोने या प्रांत से बच्चों को पढ़ा सकते है। इसमें शिक्षक और विद्यार्थी अपनी सहूलियत के अनुसार वक्त का चुनाव कर ऑनलाइन जुड़ जाते हैं। परिषदीय विद्यालयों मे पढने वाले अधिकांश छात्र निम्न आर्थिक पृष्ठ भूमि वाले होते हैं। इसीलिए ऑनलाइन शिक्षा के लिए इन संसाधनों को जुटा पाना इनके लिए अत्यंत ही दुष्कर कार्य है। शिक्षा सदैव से ही सामाजीकरण की एक प्रक्रिया रही है। जब–जब समाज का स्वरूप बदला है। शिक्षा के स्वरूप में भी परिवर्तन हुआ है। संकट की घडी में ऑनलाइन शिक्षा सही है, पर इसे कक्षाओं का विकल्प नही बनाया जा सकता। ऑनलाइन शिक्षा को कक्षाओं में आमने–सामने दी जानेवाली गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का विकल्प बताना भारत जैसे देश के लिए अन्याय पूर्ण है।

मुख्य शब्द :

कोविड–19, ऑनलाइन शिक्षा एवं परिषदीय छात्र।

प्रस्तावना :

कोविड–19 एक वैश्विक महामारी है जो कोरोना वायरस के संक्रमण से फैलती है। इस महामारी की शुरूआत चीन के वुहान शहर से 2109 में हुई। आज पूरा विश्व इसकी चपेट में है और कोरोना वायरस के संक्रमण से जूझ रहा है। इसका संक्रमण बहुत घातक है। इसके संक्रमण से व्यक्ति की मृत्यु तक हो जाती है। 30 जनवरी 2020 को भारत में कोविड–19 महामारी फैलने की पुष्टि हुई। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान (ICMR) और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने 09 अगस्त 2020 तक इस वायरस से भारत में 21,58,320 मामलों की पुष्टि की है। जिसमें 43,518 लोगों की मृत्यु हुई है। इस महामारी का पहला मामला केरल के तृशूर इलाके मे मिला। इस प्रकोप को केंद्र सरकार द्वारा महामारी घोषित किया गया है जिसके कारण महामारी रोग अधिनियम– 1897 के प्रावधानों को लागू किया गया है। सरकार ने इस महामारी की रोकथाम हेतु देशभर में लॉकडाउन जारी किया था। लॉकड़ाउन की स्थिति में देश की वाणिज्यिक. निर्माणिक, सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक सभी प्रकार की गतिविधियों पर रोक लगा दी गई थी। जिससे देश की अर्थव्यवस्था एवं सभी क्षेत्रों में बिखराव की स्थिति पैदा हो गई। इस समस्या से उबरने के लिए हमारी केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा विभिन्न प्रकार के प्रयास किये गये।

छात्र हितों एवं उनके जीवन को सुरक्षित रखने के दृष्टिकोण से केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक को ऑनलाइन माध्यम से दिये जाने का निर्णय लिया गया। उच्च कक्षाओं में अध्ययनरत् छात्रों को ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा देने का निर्णय कुछ हद तक सही है लेकिन समस्या उन बालकों की है जिन की अभी न तो समझ विकसित हुई है और न ही शारीरिक रूप से विकसित हो पाए हैं। ऐसे में प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों को ऑनलाइन माध्यम से कैसे पढाया जा सकता है ?

कोरोना संक्रमण के दीर्घकाल तक बने रहने के कारण देश की सरकार द्वारा अनलॉकडाउन की प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी गई है। लेकिन शैक्षणिक संस्थानों को अभी भी लॉकडाउन के दायरे में रखा गया है। छात्रों की शिक्षा व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालित रखने हेतु सरकार द्वारा ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा दिये जाने के निर्देश प्रदान किये गये हैं।

ऑनलाइन शिक्षा :

ऑनलाइन शिक्षा, शिक्षा का एक ऐसा माध्यम है जिसके माध्यम से कोई भी शिक्षक अपने घर पर रहकर इण्टरनेट के माध्यम से देश के किसी भी कोने या प्रांत से बच्चों को पढ़ा सकते है। इसमें शिक्षक और विद्यार्थी अपनी सहूलियत के अनुसार वक्त का चुनावकर ऑनलाइन जुड़ जाते हैं। शिक्षक गूगलमीट, गूगलक्लास रूम, फेसबुक, यूट्यूब, स्काइप, वाट्सअप, और जूमविडियों आदि प्लेटफार्म के माध्यम से बच्चों को आसानी से पढ़ा सकते है। ऑनलाइन शिक्षा को ई–शिक्षा, वेब आधारित लर्निंग, मोबाइल आधारित लर्निंग, कम्प्यूटर आधारित लर्निंग एवं वर्चुअल क्लास रूम के नाम से भी जाना जाता है। ऑनलाइन शिक्षा में इण्टरनेट व संचार उपकरणों की आवश्यकता होती है।

इस असाधारण दौर में ऑनलाइन शिक्षा के अनेक लाभ छात्रों को प्राप्त हुए है, इनमें से कुछ लाभ निम्न हैं :

1. छात्र कहीं भी किसी भी समय सीख सकताहै।
2. सुदूरवर्ती इलाकों में भी छात्रों तक शिक्षा की पहुँच बनी है।
3. शिक्षकों, छात्रों एवं आमजनों के बीच तकनीकी ज्ञान में वृद्धि हुई है।
4. स्वगति से चीजों /प्रत्ययों को सीख सकता है।
5. अधिकृत एवं समसामयिक जानकारी प्राप्त हो रही है।
6. विषय विशेषज्ञों से शिक्षा मिलती है।
7. ऑडियों एवं वीडियों रिकॉर्डिंग करके पुनः पढ़ सकते है।
8. सूचनाओं की तात्कालिक उपलब्धता।

9. सीखने में विभिन्न संसाधनों की पहुँच बनी है।
10. दूरस्थ माध्यम से अधिगम।
11. प्रभावी शिक्षा।
12. शिक्षा में लचीलापन।
13. रोजगारपरक।
14. समय और धन की बचत।
15. ज्ञान के दायरे में वृद्धि।

ऑनलाइन शिक्षा में चुनौतियाँ :

1. शिक्षकों एवं छात्रों के मध्य भावनात्मक संबंधों में कमी।
2. पाठयक्रम को पूर्ण करा पाना असंभव।
3. छात्र शिक्षण में रूचि नहीं लेते हैं।
4. छात्रों का सतत एवं व्यापक मूल्यांकन नहीं हो पाता है।
5. व्यावहारिक तौर पर अनुपयोगी।
6. शारीरिक एवं मानसिकतनाव।
7. लर्निंग आउट्कम में कमी।
8. अभिभावकों पर अनावश्यक आर्थिक बोझ।
9. कार्य में शिथिलता।
10. शिक्षा के क्रियात्मकपक्ष का विकास संभव नही।
11. जीवन शैली में बदलाव।

परिषदीय छात्र :

परिषदीय विद्यालयों में पढने वाले छात्रों को ऑनलाइन माध्यम से पढ़ाना अपने आप में यक्ष समस्या है। क्योंकि इन बालकों के साथ अनेक समस्याएँ जुड़ी हुई हैं। परिषदीय विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों की परिस्थितियाँ उतनी अनुकूल नहीं हैं जितनी समझी जाती है। इन बालकों के पास उन मूलभूत संसाधनों का भी अभाव होता है जो कि दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु आवश्यक होते हैं।

इन बच्चों के अभिभावक किसी तरह अपने परिवार का पालन–पोषण करपाते हैं। विद्यालयों में नामांकन कराने के पीछे अभिभावकों का एक उद्देश्य यह भी होता है कि उनके बच्चों को मध्यान्ह भोजन मिलेगा, यूनिफॉर्म मिलेगी, जूते–मोजे मिल जायेंगे जो कि कुछ हद तक उनकी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सहयोग करेंगे। इन बालकों की निम्न आर्थिक स्थिति इन्हें सरकार द्वारा प्रदान की जा रही सुविधाओं से केवल आर्थिक लाभ उठाने तक ही सीमित कर देती है। जबकि सरकारी योजनाएँ बालकों के समग्र विकास के लिए चलाई जा रही हैं। कोविड–19 के दौरान हमारे देश की सरकारों एवं नीति–निर्माताओं द्वारा परिषदीय विद्यालयों में ऑनलाइन शिक्षा दिये जाने के जो आदेश निर्गत किया गया है उसे जमीनी हकीकत पर लागू कर पाना असंभव है क्योंकि ऑनलाइन शिक्षा के लिए एंड्रायडफोन, लैपटॉप, इंटरनेट आदि की आवश्यकता होती है।

परिषदीय विद्यालयों मे पढने वाले अधिकांश छात्र निम्न आर्थिक पृष्ठभूमि वाले होते हैं। इसीलिए ऑनलाइन शिक्षा के लिए इन संसाधनों को जुटा पाना इनके लिए अत्यंत ही दुष्कर कार्य है। इन बच्चों के अभिभावकों के पास एंड्राइडफोन नही है और मान भी लिया जाय कि किसी के पास एंड्राइड फोन उपलब्ध है तो वे उसे आर्थिक तंगी के कारण रिचार्ज नही करवा पाते हैं। इसके साथ ही साथ ग्रामीण क्षेत्रों में इण्टरनेट की स्पीड भी अपने आप में एक समस्या है ऐसे में कैसे उम्मीद की जा सकती है कि परिषदीय बालकों को ऑनलाइन माध्यम से पढ़ाया जा

सकता है। जबकि आज भी हमारे देश की 65–70 प्रतिषत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। शिक्षकों द्वारा तो अपना कार्य जिम्मेदारी पूर्वक पूर्ण किया जा रहा है, लेकिन छात्र उससे लाभान्वित नही हो पा रहे हैं। कई बालक इन स्मार्ट उपकरणों को संचालित नही कर पाते है। जिससे उनमें तनाव की स्थिति पैदा हो जाती है।

ऑनलाइन शिक्षा एवं लर्निंग आउट्कम :

परिषदीय छात्रों की ऑनलाइन शिक्षा एवं उनके लर्निंग आउट्कम के सम्बंध को निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है :

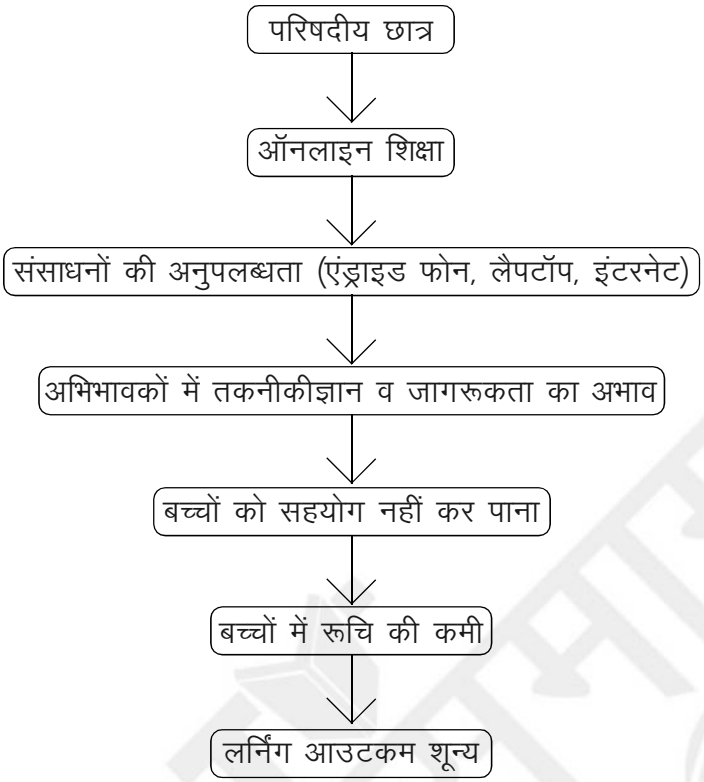

शिक्षा को प्रारम्भ से व्यक्तित्व विकास की प्रकिया माना गया है। शिक्षा ही वह साधन है जिसके माध्यम से बालक का सर्वांगीण विकास किया जाता है। शिक्षा ही वह सीढ़ी है जिसके माध्यम से कोई भी व्यक्ति विकास की नई उचाँइयों को छू सकता है लेकिन वैश्विक महामारी कोविड–19 के कारण शिक्षा के मायने ही बदल गये हैं। पहले शिक्षा ग्रहण करने के लिए बालक विद्यालय में आते थे। जहाँ उन्हें शिक्षा ग्रहण करने का खुला एवं स्वतंत्र वातावरण मिलता था। परन्तु इस ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था ने नन्हे मुन्ने बालकों का जैसे बचपन ही छीन लिया है। कोविड–19 के कारण विद्यालय का खुलावातावरण, दोस्तों के साथ खेलकूद, शिक्षक–शिक्षिकाओं का प्यार एवं दुलार उन्हें नहीं मिल पा रहा है। वे अपने बचपन को नहीं जी पा रहे हैं। ऑनलाइन शिक्षा उन्हें समय से पहले ही परिपक्व बना रही है।

कक्षा–1 का बालक जिसका इसी वर्ष विद्यालय में नामांकन हुआ है जो पूरी तरह से अपने शिक्षक–शिक्षिका को पहचानता तक नहीं है हम कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि वह ऑनलाइन शिक्षा ग्रहण करेगा। चारों तरफ ऑनलाइन शिक्षा, ऑनलाइन शिक्षा का शोर मचा हुआ है लेकिन इसकी वास्तविकता कुछ और ही है। ऑनलाइन शिक्षा लक्ष्य विहीन तीर के समान हो गई है जिसे कमान से छोड़ तो दिया गया है लेकिन किस लक्ष्य को भेदन करना है वो अज्ञात है। इसका लर्निंगआउट कम शून्य है।

शिक्षा सदैव से ही सामाजीकरण की एक प्रक्रिया रही है। जब–जब समाज का स्वरूप बदला है। शिक्षा के स्वरूप में भी परिवर्तन हुआ है। संकट की घडी में ऑनलाइन शिक्षा सही है पर इसे कक्षाओं का विकल्प नही बनाया जा सकता। ऑनलाइन शिक्षा को कक्षाओं में आमने सामने दी जाने वाली गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का विकल्प बताना भारत जैसे देश के लिए अन्याय पूर्ण है।

शिक्षाविदों, नीति–निर्माताओं एवं प्रदेश सरकारों को इस बिंदु पर गहन चिंतन की आवश्यकता है। सरकारों को प्राथमिक स्तर पर ऑनलाइन शिक्षा की अनिवार्यता को समाप्त कर देना चाहिए। जैसे ही देश में सामान्य स्थिति बनेगी इन नौनिहालों की शिक्षा को पूर्व की भांति संचालित किया जाये। ताकि उनमें शिक्षा के प्रतिलगाव एवं शिक्षा की समझ विकसित हो सके।

सन्दर्भ सूची :

1. *अरोड़ा, रीता एण्ड मारवाहा, सुदेश (2013), साइको–सोशियल बेसिस ऑफ लर्निंग एण्ड टीचिंग, जयपुरः शिक्षा पब्लिकेशन।*
2. *गुप्ता, एस0 पी0 एण्ड गुप्ता, अलका (2013), एडवांस्ड एजूकेशनल साइकोलॉजी इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।*
3. *एल0 डी0 क्रो एंड ए0 क्रो, (1979), एजूकेशनल साइकोलॉजी थर्ड एडिशन, न्यूडैल्ही, यूरेसिया पब्लिशिंग हाउस।,*
4. *पाठक, पी0डी0 (2013), एजूकेशनल साइकोलॉजी, आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन।*
5. *एस0 नारायनराय, (1980), एजूकेशनल साइकोलोजी, न्यूडैल्ही, विलेईस्टर्न लिमिटेड।*
6. *सिंह, ए0 के0, (2010), एजूकेशनल साइकोलॉजीपटना : भारतीभवन।*
7. *www.corona.mygov.in*
8. *www.mohfw.gov.in*
9. *https://www.shiksha.com/mba/articles/online-education-in-india-trends*
10. *https://www.indiatoday.in/education-today/featurephilia/story/covid-19.*

****